

पचायम्मा उन अनगिनत औरतों में से एक है, जिनके गाँव में एक दलित परिवार की रोज़ाना ज़िन्दगी ज़मींदारों की मेहरबानियों पर ही चलती है। पर पचायम्मा इन सत्ता के समीकरणों में, ताकतवर को अपने ही अनोखे तरीकों से चुनौती देती नज़र आती है।

तगड़ी ज़मींदारन गंगम्मा के मुकाबले में खड़े होने की पचायम्मा की इस तूफानी यात्रा में आप भी उसके साथ जुड़िये।



मुसुफ़ान

मिर्ची का चूरा



कला:
कैरन
हेडाक

बात्मा

मिर्ची का चूरा Mirchi ka Choorā

कहानी : बामा

चित्रकार : कैरन हेडाक

अनुवाद : रमा वेदुला

मिर्ची का चूरा

बामा

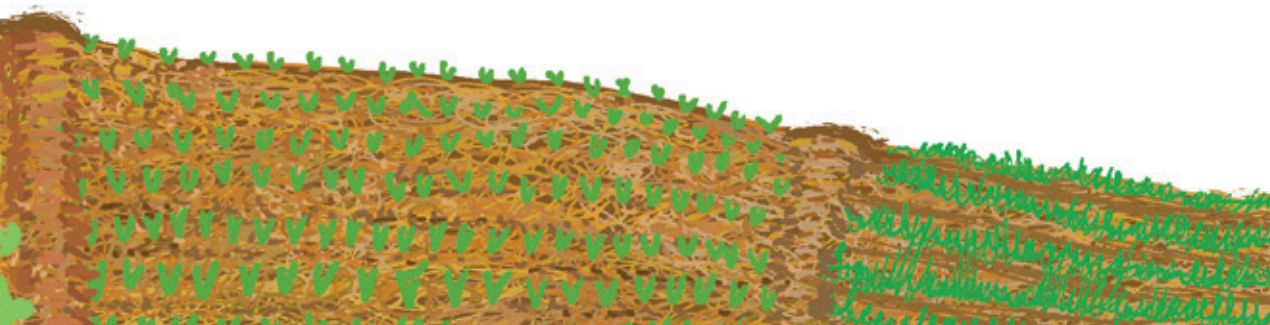




गाँव में लगभग हर दिन ही गंगम्मा के बारे में कुछ ना कुछ कहा ही जाता था। अगर कोई छोटा बच्चा भी रो रहा हो तो यह कहना काफ़ी था कि गंगम्मा आ रही हैं और वह झट चुप हो जाता।

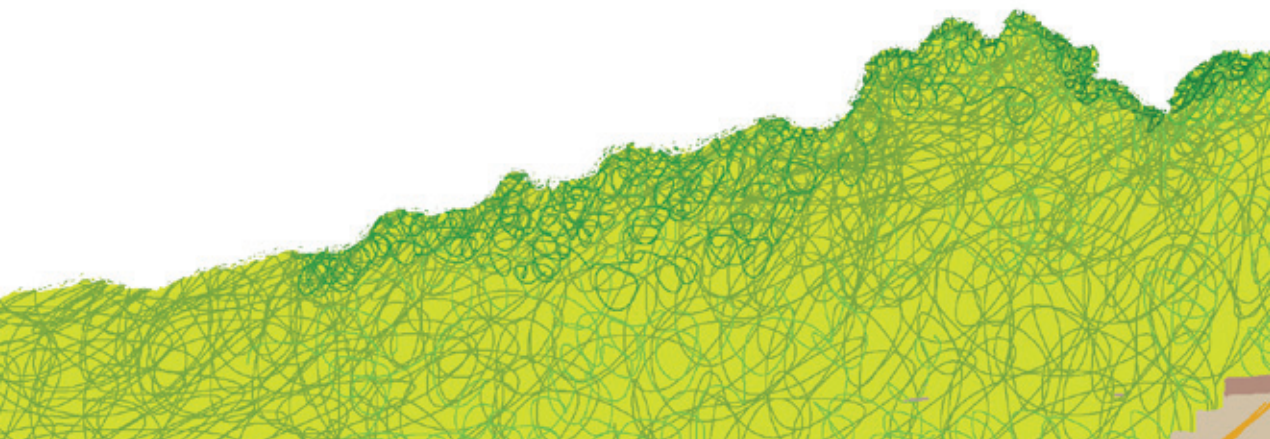
गंगम्मा के पास खेतों और बगीचों की बेशुमार दौलत थी। हालाँकि वह काफ़ी बेडौल सी थी और उसकी बड़ी तोंद तो ऐसी थी मानो कि ताड़ के पत्ते पे मेंढकों का हुजूम चिपका हुआ हो, बलराम नायकर के बेटे जगन्नाथ नायकर ने, शायद उसकी दौलत पर नज़र रखकर ही उससे गठजोड़ा बाँधा था। शादी के कई साल बाद तक भी, वह बिना बच्चे के ही रहे। गाँव वाले मज़ाक उड़ाते, कि उसके शरीर में चर्बी इतनी भरी थी कि बच्चों के पनपने

की क्या जगह हो पाती, लेकिन दस-बारह सालों के गुज़र जाने के बाद अचानक पता चला कि गंगम्मा पेट से हैं, और उसकी एक बेटी हुई। जब बेटी सयानी हो गयी, तो उसका कहीं दूर के गाँव में ब्याह कर दिया, और गंगम्मा फिर से अपनी कोठी में अकेले रहने लगी। गंगम्मा के कोई भाई बहन नहीं थे, और माँ-बाप और पति पहले ही मर गए थे। इसलिए वह अकेले ही बगीचों और खेतों की देखभाल करती, जो भी फ़सल और फल उगते, उन्हें शहर में अपनी बेटी के घर भिजवा देती। बेटी भी बड़ी महान थी, साल में दो बार माँ के घर आती और जो भी चावल, अनाज, हरी फलियाँ, फल होते, उन्हें गाड़ी में भरवा कर ले जाती।



गंगम्मा का मकान महलनुमा कोठी जैसा था, जिसमें दो माले थे। लोग हैरान होते कि वो इतनी बड़ी कोठी में अकेले कैसे रह पाती है? यह कोठी उसके दादाजी शिवराम नायकर के समय बनवाई थी। इसाकीमुत्थु का परिवार, जो पास की बस्ती में रहता था, कोठी और उसके आसपास का सारा काम करता। साथ ही, सभी बगीचों और खेतों को भी संभालता। इसाकीमुत्थु का बेटा, करुथापंडी, गंगम्मा से बुरी तरह घबराता था। वह हर तरह से उसकी नज़र से बचने की कोशिश करता पर गंगम्मा उसे आसपास रहने के लिए मजबूर करती। वह करुथापंडी को धमकाती कि उसके बाप का लिया हुआ कर्ज चुकाए बिना वह कहीं और काम नहीं कर सकता।

गंगम्मा का शरीर इतना भारी था कि जो भी उसे देखता तो उसकी सांस अटक जाती। उसके हाथ और पैर, हाथी के पैरों जितने मोटे थे, इसके बावजूद वह अपनी मोटी काया को घसीटते हुए, बिना थके, हर दिन अपने सभी खेतों और बगीचों का मुआयना करती। गंगम्मा के नाम पर पचास से साठ एकड़ ज़मीन थी, और सारी की सारी बेहद उपजाऊ। इतनी उपजाऊ कि, जहाँ कोई चाहे तो सोना बो दे और उगा ले। वह अपनी ज़मीनों का एक बित्ता भी बिना बोये नहीं छोड़ती थी और गिद्ध की आँख से खेतों और मज़दूरों पर नज़र रखती।





गंगम्मा की ऐसी दहशत थी कि बस्ती में हर कोई उससे डरता था। पर पचायम्मा अकेली थी, जिस पर गंगम्मा के नाम का ज़रा भी ज़ोर नहीं था।

वह इतनी बेशर्म थी,
कि घास काटने
सिर्फ़ गंगम्मा
के खेतों में

ही घुसती। क्योंकि कोई वहाँ जाने की जुर्रत करता नहीं था, तो उसे बढ़िया सी घास मिल जाती। बिना किसी डर के वह मोटी हरी घास काटती, बाँधती और उठाकर ले जाती। बात यहाँ तक थमती नहीं थी, न केवल वो ये हिमाकत करती, बल्कि पूरी बस्ती में अपने कारनामे सुनाती भी फिरती।





एक बार पचायम्मा नल पर पानी भरने पहुँची और इतराते हुए बोली, “आज मैं गंगम्मा के आम के बगीचे में घास काटने गई थी। तुम्हें वह घास देखनी चाहिए! इतनी घनी घास उगती है, मैंने इतनी सारी काट ली कि गट्ठर बाँधने पर मुझसे तो अकेले उठाते ही नहीं बना। मैंने अपनी मुन्थानी लपेटी और सिर पर रख ली, ताकि कोई पास से गुज़रे तो उससे गट्ठर उठाने में मदद ले लूँ। पर वहाँ तो दूर-दूर तक एक परिंदा भी नहीं फटका। बड़ी देर हो रही थी, एक बार तो मैंने सोचा कि थोड़ी घास कम कर दूँ और बाकी ले जाऊँ, पर मन नहीं माना, मुझे लगा थोड़ी देर और देख लेती हूँ। मैंने वहाँ पास के पेड़ से दो आम तोड़े, और हसिये से उनको काटा और खाने लगी, मैं भूखी थी, आम खाकर मज़ा आ गया, हालाँकि वे थे तो उस शैतान औरत के आम, पर मानना पड़ेगा, कमाल के थे। जैसे शहद में डूबे हुए हों, इत्ता भी खट्टा नहीं। मैं उनका भरपूर मज़ा ले रही थी कि गंगम्मा खुद वहाँ पहुँच गई। मैंने

फ़ टा फ़ ट
आम अपने
पल्लू में छिपाए,
और सीधे उससे
घास का गट्ठर
उठाने में मदद
माँगी। फिर क्या
कहना था? वह
आगबबूला हो गई, औ र
पागल हाथी की तरह झूमने
लगी। जाने कहाँ से मुझमें
हिम्मत आई? मैंने सांस रोकी,
गट्ठर सिर पर उठाया और
आधी चलती आधी दौड़ती, यहाँ
भाग आयी।”

“एई, ज़्यादा बड़बोली मत बन।
जैसे उसने तुझे भागने दिया
होगा,” पास में खड़ा पर्वथम
बोला।

“वह कर भी क्या सकती है?
वो मेरा बाल भी बाँका नहीं
कर सकती। अगर वो एक
कदम भागेगी, तो यह पचायम्मा
अठारह कदम भाग लेगी,” ऐसी
सब डींगें हाँकते हुए पचायम्मा
ने अपनी मटकी उठाई और
पानी भरने आगे बढ़ गई।

दो-तीन दिनों के बाद पचायम्मा दो और औरतों के साथ, फिर से गंगम्मा के खेत पर घास काटने पहुँच गयी। अभी वे घास काट ही रहे थे कि गंगम्मा ने उन्हें देख लिया। फिर एक बिल्ली की चाल से दबे पाँव वह अपने घर लौटी और कागज़ में लाल मिर्ची का चूरा लपेट वापस वहीं पहुँच गई। घर खेत के काफ़ी करीब था, इसका उसे फ़ायदा मिला। वो सीधा उस मेड़ पर पहुँची, जहाँ पचायम्मा घास काट रही थी, और गरज कर बोली, “मनहूस, चोर कहीं की! क्या तेरे पास जाने की कोई और जगह नहीं जो तू मेरा गला काटने यहाँ चली आती है? तेरी तो खुद की जात की औरतें ही कहती हैं कि तू बेशर्म है! लगता है वो बिल्कुल सही हैं। सारा गाँव गंगम्मा के खेत के किनारे से सिर झुका के निकल जाता है, पर तुझे तो अपनी हेकड़ी दिखानी है ना?” यह सारी बात अभी पूरी भी नहीं हुई थी कि उसने पचायम्मा की आँखों में लाल मिर्च का चूरा झाँक दिया।

जैसे ही पचायम्मा की आँखों में लाल मिर्च लगी, वह गुस्से से तिलमिलाने लगी। अपनी मुन्थानी से सुलगती आँखों को पोंछते हुए वह चिल्लाने लगी, “छी, कौन तुझे औरत कहेगा? मेरी आँखों में लाल मिर्च फेंक रही है, सिर्फ़ इसलिए कि मैं वो घास काट रही हूँ जो अपने आप उगती है? क्या हम यहाँ कोई अनाज और फल की फ़सल चुराने आए हैं? इसके मुँह को तो देखो, जैसे कोई सूजा हुआ कद्दू हो और बेशरम राँड के पेट को तो देखो, जैसे हरदम दस महीने के गर्भ से हो! तेरा मर्द एक बच्चे के होने के बाद ही मर गया, शायद तेरे इसी चालचलन की वजह से! छी!”

गालियाँ देते-देते ही पचायम्मा ने घास का गट्ठर बाँधा और बाकी दोनों औरतों को आवाज़ लगाई, “अपनी घास जल्दी-



जल्दी बाँध लो। उफ! मेरी आँखें। राँड कहीं की, तेरा जनाज़ा निकले!
मेरी आँखें इतना जल रही हैं। तेरे हाथों में कोढ़ पड़े, मरी हुई
कुत्ती, देखो तो! कैसे अनाज की भारी बोरी की तरह
खड़ी है वहाँ?” यह सब बड़बड़ाते हुए वह वहाँ से
निकल पड़ी। बाकी दोनों औरतों को लगा कि
बहुत सस्ते में छूट गए, और उसके साथ
जान बचाकर भागीं।





देखो तो सही... कैसे
चूहे के पूछ की तरह
अपनी चोटी हिलाती है!”

फिर क्या था? उस दिन
तो पूरी बस्ती में बस इसी
घटना का ज़िक्र चलता
रहा जिसको देखो उसके
पास एक नयी कहानी थी।

गंगम्मा कहाँ चुप रहने वाली
थी? उसने भी ईंट का जवाब
पत्थर से दिया, खूब गाली
गलौच की। गुस्से में तमतमाती
हुई पचायम्मा ने खेत से बाहर
निकलकर भी चिल्लाना जारी
रखा। “मेरी आँखों में मिर्ची क्या
फेंक दी, खुद को तीस मारखाँ
मत समझ लेना! राँड कहीं की,
बुरी नज़र वाली! सुन्दर नाम
है तेरा... गंगम्मा नौलीअम्मा...
हगता हुआ कुत्ता भी तेरी तरफ़
आँख उठाकर नहीं देखेगा...

“जब उस औरत के बारे में
सब जानते ही हैं, तो इन तीनों
को वहाँ घास काटने जाना ही
क्यों था? इतनी क्या हेकड़ी
दिखाना!”

“वो तो ठीक है पर उसे देखो,
कितनी चालाक निकली! उसने
अपने घर तक जाके, वहाँ
से लाल मिर्ची का चूरा लाके
पचायम्मा की आँखों में डाला!
अगर वो अंधी हो जाती तो?
अगर घास काटने पे ऐसा कर

सकती है तो फसल छूने पे तो जाने क्या कर दे? मार डालने से भी शायद पीछे नहीं हटेगी!”

“और अगर हम ज़मींदारों के खेतों और बगीचों से ना लाएं तो फिर हम घास काटने कहाँ जायेंगे? ढोरों को खिलाने के लिए घास तो लानी ही है। मानो उसके खेतों में कोई सोना जड़ा हुआ है, जो दुनिया में किसी और के पास नहीं!”

“एई, उसके बारे में ऐसे बात करना ठीक नहीं। मुझे तो लगता है कि इस पचायम्मा ने ही बहुत मोटी खोपड़ी पाल रखी है। वह केवल गंगम्मा के खेतों में ही जाती है, जैसे मोटा केकड़ा अपने बिल में ठहर ही न पा रहा हो! कोई और तो उसके खेतों में जाता नहीं? पचायम्मा को ही अकेले वहाँ क्यों जाना है? जैसे कोई गवर्नर की बीवी हो।”





इस घटना के बाद तो गाँव के सारे लोग गंगम्मा को 'मोलगापोड़ी' यानी लाल मिर्ची का चूरा के नाम से बुलाने लगे। इस शब्द का जिक्र सुनते ही उस महिला को बहुत गुस्सा आ जाता था, पर पचायम्मा और बाकी औरतें, उसके उपस्थिति में बार-बार मोलगापोड़ी बोलकर खूब मज़े लेती थीं।

एक ऐसे ही दिन पचायम्मा और चार-पाँच औरतें सरसों के खेतों में काम करके अपने घर लौट रहीं थीं। दूर से गंगम्मा को आते हुए देखकर, पचायम्मा ने बात छेड़ी, “अरे सुना है वो मिर्ची का चूरा बनाने वाली मशीन अब हमारे गाँव में भी लगाने वाली है। माटसाब की बीवी, वो जो गली के नीचे तरफ़ रहते हैं आजकल मिर्ची पीसती नहीं है बल्कि ज़मींदारों की तरह मिर्ची का चूरा इस्तेमाल करती है।”



“ओह, ऐसा क्या मथिनी, बड़ी आसानी हो जाती होगी, मिर्ची का चूरा घर में तैयार रख लो, चाहो तो सब्ज़ी में डालो, चाहो तो लोगों की आँखों में झाँक दो।” चित्तम्मा ने अपनी बात खत्म ही की थी कि गंगम्मा उनके सामने आ गई।

उनसे चार कदम आगे जाकर गंगम्मा जोर-जोर से चिल्लाने लगी, “बदबूदार राँडों! तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई ऐसे बात करने की? जेब में धेला नहीं, पहनने को कपड़ा नहीं, पर देखो कैसी बातें कर रहे हैं! कुतिया कहीं की!”

बस यह सुनना था कि पचायम्मा का गुस्सा भड़क गया। उसने तो अपने दिलिये की हाँड़ी से गंगम्मा को मारने के लिए हाथ भी उठा लिया। अबकी बार तो बाकि औरतों ने भी उसका साथ दिया। इस तरह खुद को घिरा देखकर गंगम्मा बिना रुके ही आगे चली गई। चलते चलते गुस्से में बुदबुदाती रही।





इस बात के दो हफ्ते बाद, दस-बारह औरतें गाँव के ऊपर वाली पहाड़ी के जंगल में खरपतवार काटने की मज़दूरी ढूँढने गयीं। पर जब वहाँ कोई काम नहीं मिला तो वे वापिस लौटने लगीं। पचायम्मा ने टंडी सांस भरते हुए कहा, “कोई काम नहीं, कोई दिहाड़ी नहीं! पता भी नहीं है कि आज मैं क्या पकाऊँगी? ये किस तरह की ज़िन्दगी है? आप काम करते हो, तभी आपको कांजी मिलती है। नहीं तो चुपचाप पानी पी के सो जाओ।”

“एई...तेरी क्या मुश्किल है? तेरा आदमी तो कुछ ठीकठाक कमा कर लाएगा.....”

“चुप रहो! उस नालायक के बारे में तो बात ही मत करो। पूरे दो महीने से उसको काम नहीं मिला। पिछले महीने यह बोलकर गया कि कहीं पर कुआँ खोदने का काम चल रहा है और उसे वहीं रहना है। भगवान ही जाने कि वह बाहर रहेगा, काम पूरा करेगा, या बीच में ही छोड़कर वापस आ जाएगा। ऐसे आदमी का क्या भरोसा जिसका दिल ही काम में नहीं?” यह सब बोलते-बोलते पचायम्मा ने खेत से चलते-चलते वहाँ पूरी तरह खिल चुके कपास की कुछ फलियाँ तोड़ लीं, और





अपने पल्लू में बाँध लीं। उसे
ऐसा करते देख बाकी औरतों ने
भी फ़टाफ़ट कपास की फलियाँ
तोड़ीं और सभी के पास एक
छोटी सी ढेरी तैयार हो गई।

रास्ते में गंगम्मा के खेत पर
भी हाथ मारने में नहीं झिझके।
मानो उनके आने की भनक उसे
लग गई हो, उसी वक्त गंगम्मा
वहाँ पहुँच गई। पचायम्मा को
देखते ही उसने पक्का कर
लिया कि आज इस औरत को
सबक सिखा कर ही रहूँगी।



उसी दौरान इलाके का पुलिस इंस्पेक्टर और दो हवलदार गंगम्मा की गली में कुछ काम के लिए आए थे। वह तुरंत उन्हें अपने खेत पर ले गयी। इंस्पेक्टर तो उसका अपना आदमी था। वो गंगम्मा के बड़े भाई चिन्नाचामी नायकर के घर के ऊपरी मंज़िल पर रहता था। गंगम्मा ने इस पहचान को भुनाने में ज़रा भी देर नहीं लगाई।

पचायम्मा और दूसरी औरतें अभी कपास की फलियाँ तोड़ ही रहीं थीं। वे गंगम्मा और पुलिस वालों को आते देख अचानक घबरा गईं। उन्होंने अपनी ढेरी उठाई और लगीं भागने। भागते-भागते भी पचायम्मा से रहा न गया। वह बोली, “देखो आज मोलगापोड़ी ने क्या किया? अपने साथ पुलिस को ले आई। जानबूझ के हमें परेशान करने

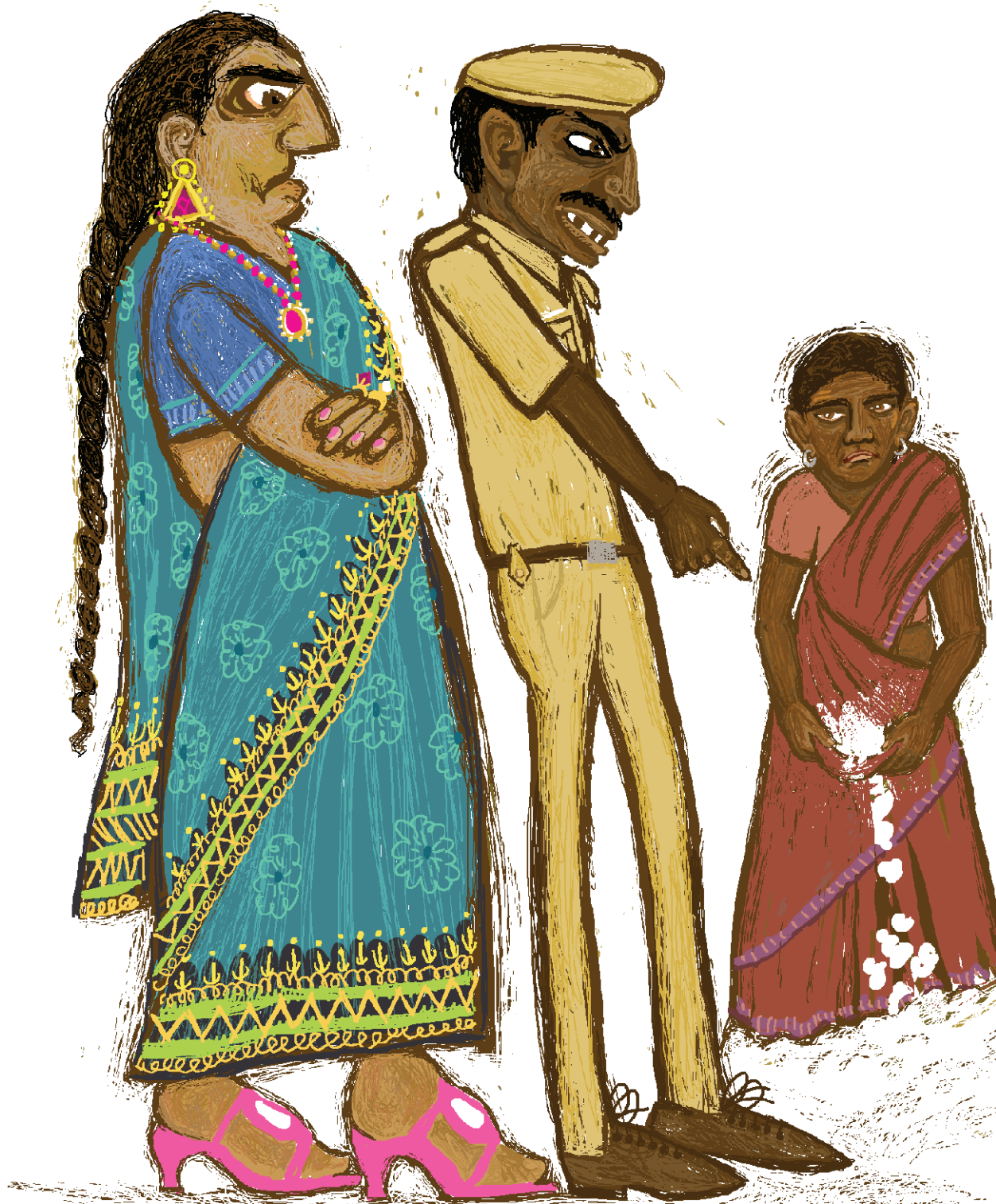


के लिए ऐसा किया है। भाई, दुनिया तो पैसे वालों की ही सुनती है।”

घबराहट में मदाथी बोली, “एई अक्का, चुप रहो। अब ज़्यादा बड़बड़ करके सारी बात ना बिगाड़ देना! समझौता करो और यह सोचो कि यहाँ से भाग के घर कैसे पहुँचे? देखो हम आखिरकार आज पकड़े ही गए!”

पुलिस इंस्पेक्टर ने घुड़कते हुए पूछा, “तुम सारी की सारी, कब से दूसरों के खेतों से सामान चुरा के अपना घर चला रही हो? सब अपनी फलियाँ वहीं डालो और हमारे साथ थाने चलो।”





पचायम्मा तुनक कर बोली,
“ऐसा क्यों करें? ये सारी
कपास की फली कोई इस खेत
की थोड़ी हैं। हमने ज़्यादातर
तो पश्चिम के खुले चारागाह
से बटोरी हैं। यहाँ से तो बस
इतना ही लिया है।” ऐसा बोलते
हुए उसने अपने पल्लू के गाँठ
में पड़ी फलियों को ज़मीन पर
गिरा दिया।

गंगम्मा ने गुर्राते हुए बोला,
“खोलो सारी पोटलियाँ, ज़रा
देखें कि यह चारागाह की हैं
भी या नहीं?”

पुलिसवाले भी जोर डालने लगे,
इसीलिए सभी पोटलियाँ खुली
और सारी फलियों का ज़मीन
पर एक ढेर लगाया गया। सारी
फलियाँ बढ़िया किस्म की थीं।
पुलिसवाला गरजा, “यह कोई
चारागाह के पास की तो नहीं
लगतीं। तुम लोग ऐसे ही चोरी
करते रहोगे तो किसानों को
मुनाफ़ा कैसे होगा? चलो थाने
सब के सब।” तो सारी औरतों
को गंगम्मा के ट्रैक्टर में बिठाया
गया और उन्हें थाने ले जाने
की तैयारी हुई।



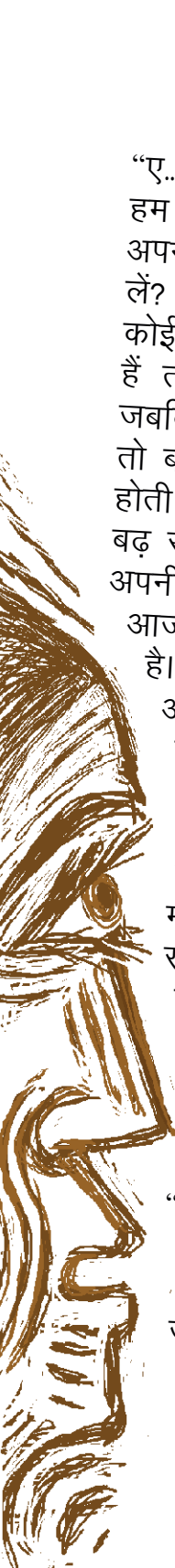
रास्ते में ट्रैक्टर में
बैठे-बैठे ही औरतों
के बीच लड़ाई होने
लग गई। एक दूसरे
पर इल्जाम लगाने
लगीं और गाली
गलौज करने लगीं।
केवल पचायम्मा ने
आखिर में उन्हें चुप
कराया।



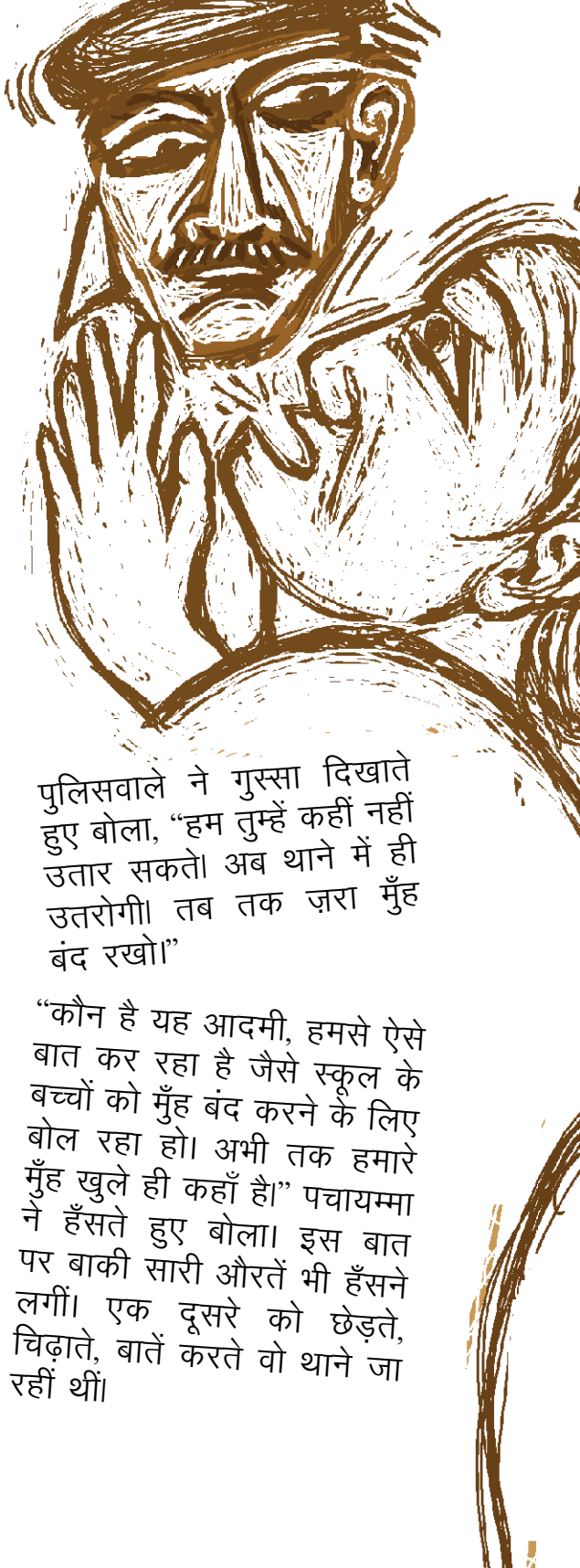
“अरे तुम एक दूसरे से क्यों लड़ रही हो अब? क्या थाने ले जाकर हमारा सिर काट देंगे? ठंडक रखो! जहाँ तक मेरी बात है, मुझे तो मूतने जाना है... जल्दी।”

उसकी बात खत्म होते ही वीरायी बोली, “क्या यह कोई कम बड़ी बात है कि हम चोरी करते हुए पकड़ी गईं? ऐसा कभी हुआ है पहले? और हम तो कभी थाने भी नहीं गए। हम तो इस सारे झमेले में तुम्हारी वजह से ही पड़े हैं। अब इतनी बेशर्म भी ना बनो।”



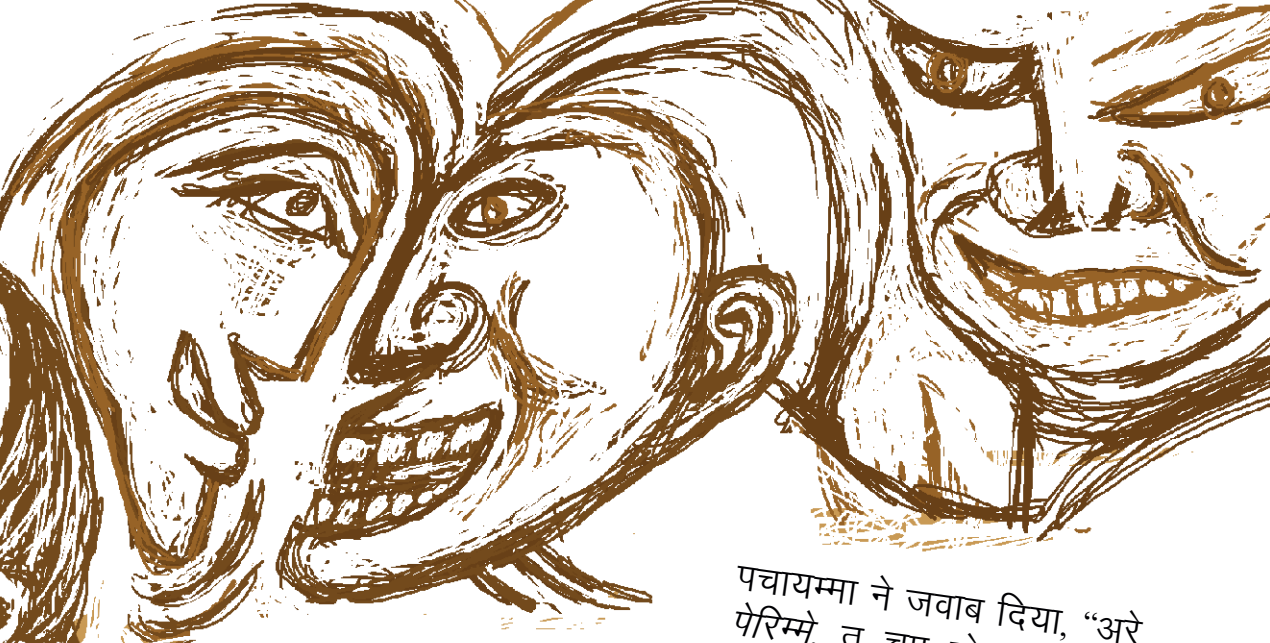


“ए... बेशर्मी की क्या बात है? क्या हम इसलिए चोरी कर रहे हैं कि अपने घरों पर खपरैल की छत डाल लें? या अपने गले, और कान के लिए कोई जेवर बना लें? हम चोरी करते हैं ताकि भूखे मरने से बच सकें। जबकि जिन्दा रहने के लिए हमें तो बस थोड़ी सी कांजी ही चाहिए होती है। सच बता... जितनी महँगाई बढ़ रही है, क्या पेट भर कांजी भी अपनी दिहाड़ी से निकाल पाते हैं? आज हम पे एक सिक्का तक नहीं है। जिस दिन हमें काम मिलता है और दिहाड़ी मिलती है, तब भी तो हम टूटे चावल की कांजी और रसम ही पीते हैं ना? आज मैंने सोचा था कि ये कपास बेच के थोड़ी सी सूखी मच्छी ले आऊँगी, और उसकी सब्जी बनाऊँगी पर उस पापी की औलाद को भी तभी आना था और सब बिगाड़ देना था।” बोलते-बोलते पचायम्मा ने पुलिसवाले की तरफ देखा और बोली “अय्या, ज़रा मुझे घड़ी भर के लिए नीचे तो जाने दो। मैं मुत के झट से वापस आ जाऊँगी।”



पुलिसवाले ने गुस्सा दिखाते हुए बोला, “हम तुम्हें कहीं नहीं उतार सकते। अब थाने में ही उतरोगी। तब तक ज़रा मुँह बंद रखो।”

“कौन है यह आदमी, हमसे ऐसे बात कर रहा है जैसे स्कूल के बच्चों को मुँह बंद करने के लिए बोल रहा हो। अभी तक हमारे मुँह खुले ही कहाँ है।” पचायम्मा ने हँसते हुए बोला। इस बात पर बाकी सारी औरतें भी हँसने लगीं। एक दूसरे को छेड़ते, चिढ़ाते, बातें करते वो थाने जा रही थीं।



रास्ते में बूढ़ी कलाथी बार-बार बोलती, “कौन मुआ इस गाड़ी में बैठकर कहीं आता-जाता है? ऊपर-नीचे, ऊपर-नीचे, यह तो पूरे वक्त हमें ऊपर-नीचे उछालती रहती है। यह किस तरह की फ़ालतू गाड़ी है। और इन औरतों को तो देखो, ऐसे हँस रही हैं, जैसे कोई तीर्थ यात्रा पर जा रही हों। चुप रहो सारी।”

पचायम्मा ने जवाब दिया, “अरे पेरिम्मे, तू चुप हो जा। गाड़ी जैसे घूम रही है, मेरे को तो अपनी मूत रोकना मुश्किल हो रहा है। ये आदमी हमको जाने भी नहीं देते। अब थोड़ी ज़्यादा देर लगी तो मुझे यहीं बैठ जाना पड़ेगा।”



जैसे ही वो थाने पहुँचे, पुलिसवाले ने उन सब को उतरने के लिए कहा। जैसे ही उतरी पचायम्मा ने अपनी कपड़े ज़रा ऊपर उठाये और वहीं खड़े-खड़े मूतने लगी। बाकी औरतों ने भी बिल्कुल ऐसा ही किया। इसे देखते ही पुलिसवाले चिल्लाने लग गए, “छी! गंधी कहीं की! ये तो पूरा थाने में बदबू फैलाएँगी।”



पचायम्मा हँसते हुए बोली, “अय्या, इन्सान अपने गुस्से को तो रोक सकता है, पर मूत को नहीं। इसीलिए तो आपको बोले थे कि रास्ते में उतरने दो। आप ही तो बोलते रहे कि थाने पहुँचकर करना।”

“सेरी, सेरी, अच्छा अब आगे बढ़ा, देर हो रही है।”

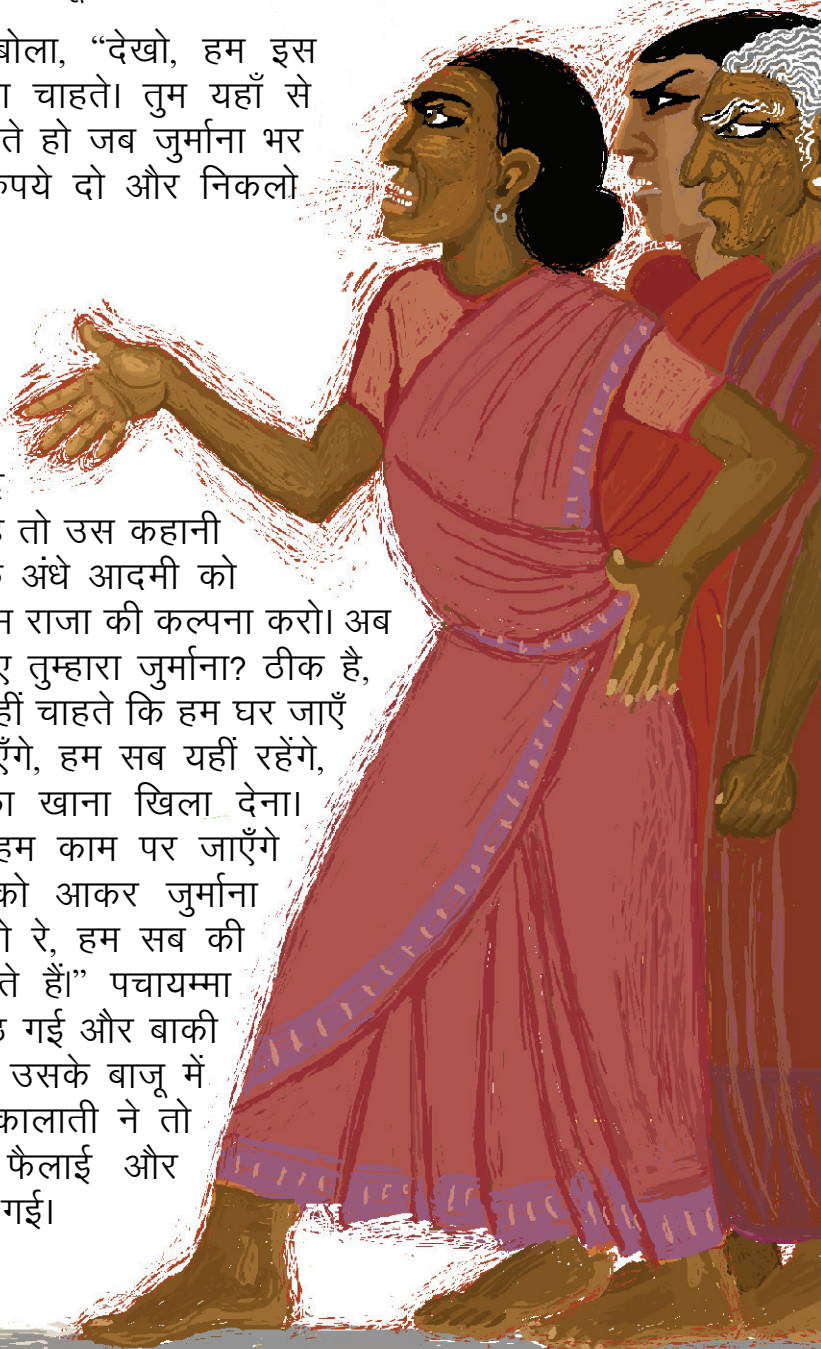
“हम तो मूतने के बाद ही सीधे खड़े हो पाते हैं,” ऐसा बोलते-बोलते पचायम्मा आगे चलने लगी। बाकी औरतें भी उसके पीछे हो लीं। यह देखते हुए पुलिसवाला चिल्लाया, “एई.. एई... कहाँ जा रही हो? यहाँ वापस आओ। सभी औरतें दस-दस रुपये का जुर्माना भरके जाओ।”

“क्या मतलब, एई ओई, किसे बोल रहे हो? हमारा खसम है जो हमको ऐसे बोलता है। हमने इतनी मेहनत लगाकर कपास तोड़ी, ताकि उसे बेच सकें, पर तुम्हारे आदमी ने बोला कि वहीं के वहीं छोड़ दो। और अब तुम बोल रहे हो कि ऊपर से दस रुपये का जुर्माना भी दें... मज़ाक है क्या?” हम कांजी के

लिए टूटे चावल तक खरीद नहीं सकते, और यह दस रुपये माँग रहा है। दस रुपये! किसे बेवकूफ बनाने की कोशिश कर रहे हो? तुम जानते हो कि हममें से किसी के भी पास थोड़ी सी नसवार खरीदने के लिए फूटी कौड़ी तक नहीं है।”

पुलिसवाला बोला, “देखो, हम इस में नहीं पड़ना चाहते। तुम यहाँ से तभी जा सकते हो जब जुर्माना भर दोगे। दस रुपये दो और निकलो यहाँ से।”

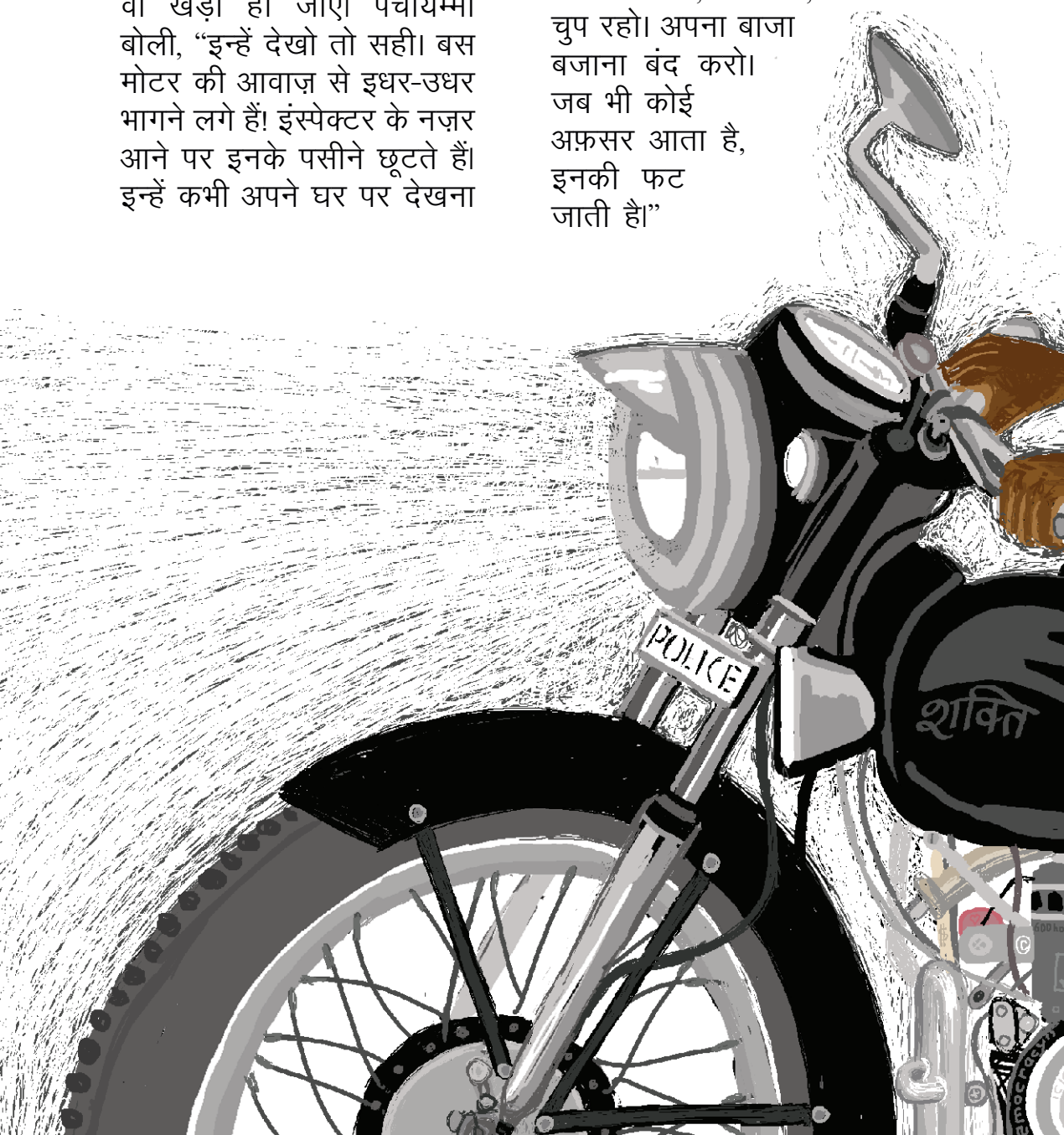
“ये तो हद है भाई! यह तो उस कहानी जैसा है कि अंधे आदमी को बोला कि तुम राजा की कल्पना करो। अब कहाँ से लाए तुम्हारा जुर्माना? ठीक है, अगर तुम नहीं चाहते कि हम घर जाएँ तो नहीं जाएँगे, हम सब यहीं रहेंगे, बस रात का खाना खिला देना। कल सुबह हम काम पर जाएँगे और शाम को आकर जुर्माना भर देंगे। चलो रे, हम सब की सब यहीं बैठते हैं।” पचायम्मा वहीं जाकर बैठ गई और बाकी सारी औरतें भी उसके बाजू में बैठ गयीं। बूढ़ी कालाती ने तो अपनी मुन्थानी फैलाई और उस पर लेट ही गई।

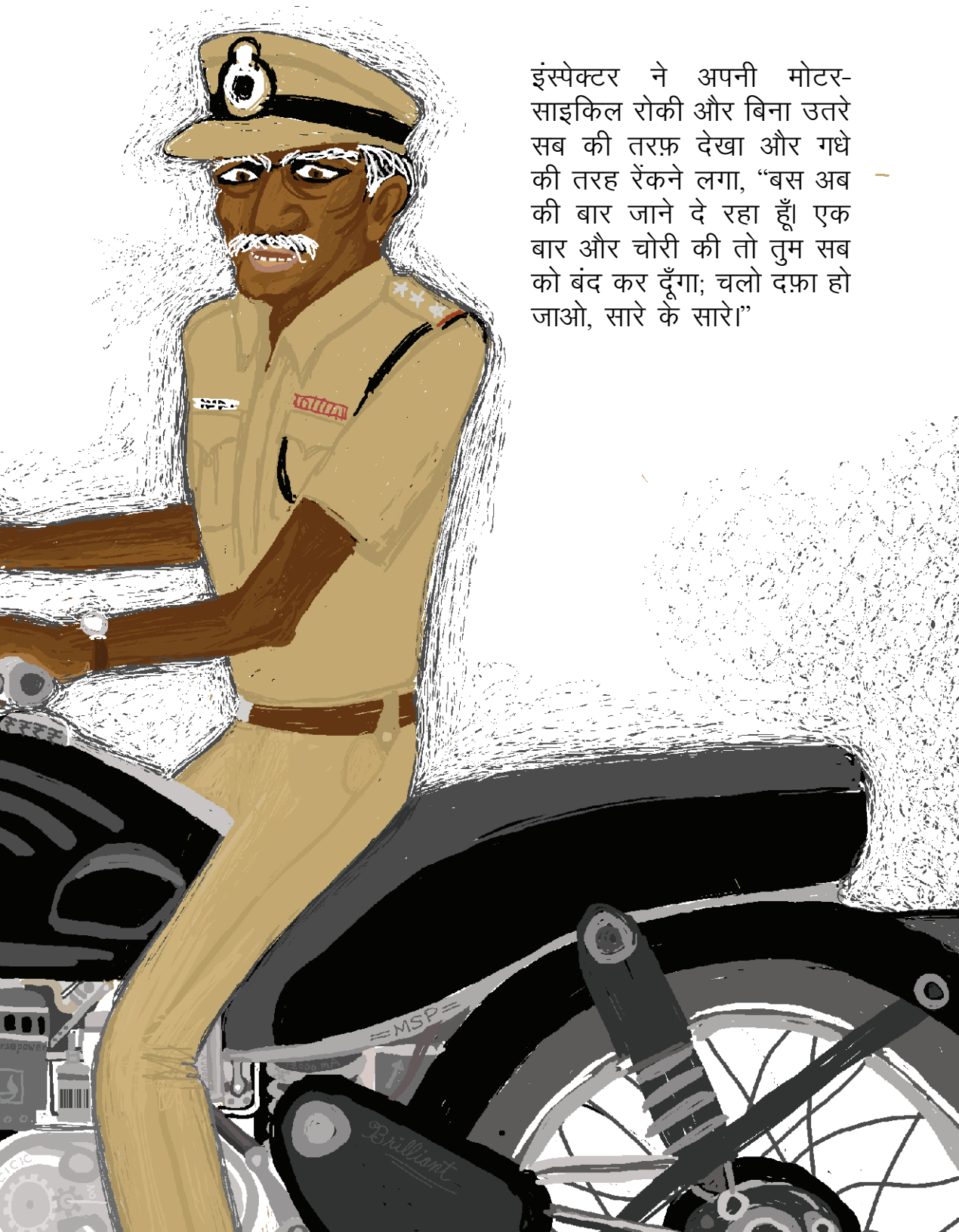


इतनी देर में इंस्पेक्टर अपनी मोटरसाइकिल पर आया। दोनों हवलदार फ़टाफ़ट तैनात हो गए, सारी औरतों को बोला कि वो खड़ी हो जाएँ। पचायम्मा बोली, “इन्हें देखो तो सही। बस मोटर की आवाज़ से इधर-उधर भागने लगे हैं। इंस्पेक्टर के नज़र आने पर इनके पसीने छूटते हैं। इन्हें कभी अपने घर पर देखना

चाहिए, अपनी बीवियों के आगे अपनी मूँछों पर ताव देकर बड़े हीरो बनते हैं।”

अर्रायी बोली, “मथिनी, चुप रहो। अपना बाजा बजाना बंद करो। जब भी कोई अफ़सर आता है, इनकी फट जाती है।”





इंस्पेक्टर ने अपनी मोटर-
साइकिल रोक़ी और बिना उतरे
सब की तरफ़ देखा और गधे
की तरह रेंकने लगा, “बस अब
की बार जाने दे रहा हूँ। एक
बार और चोरी की तो तुम सब
को बंद कर दूँगा; चलो दफ़ा हो
जाओ, सारे के सारे।”

बस फिर क्या था? भागीं सब की सब अपने घर की तरफ़।

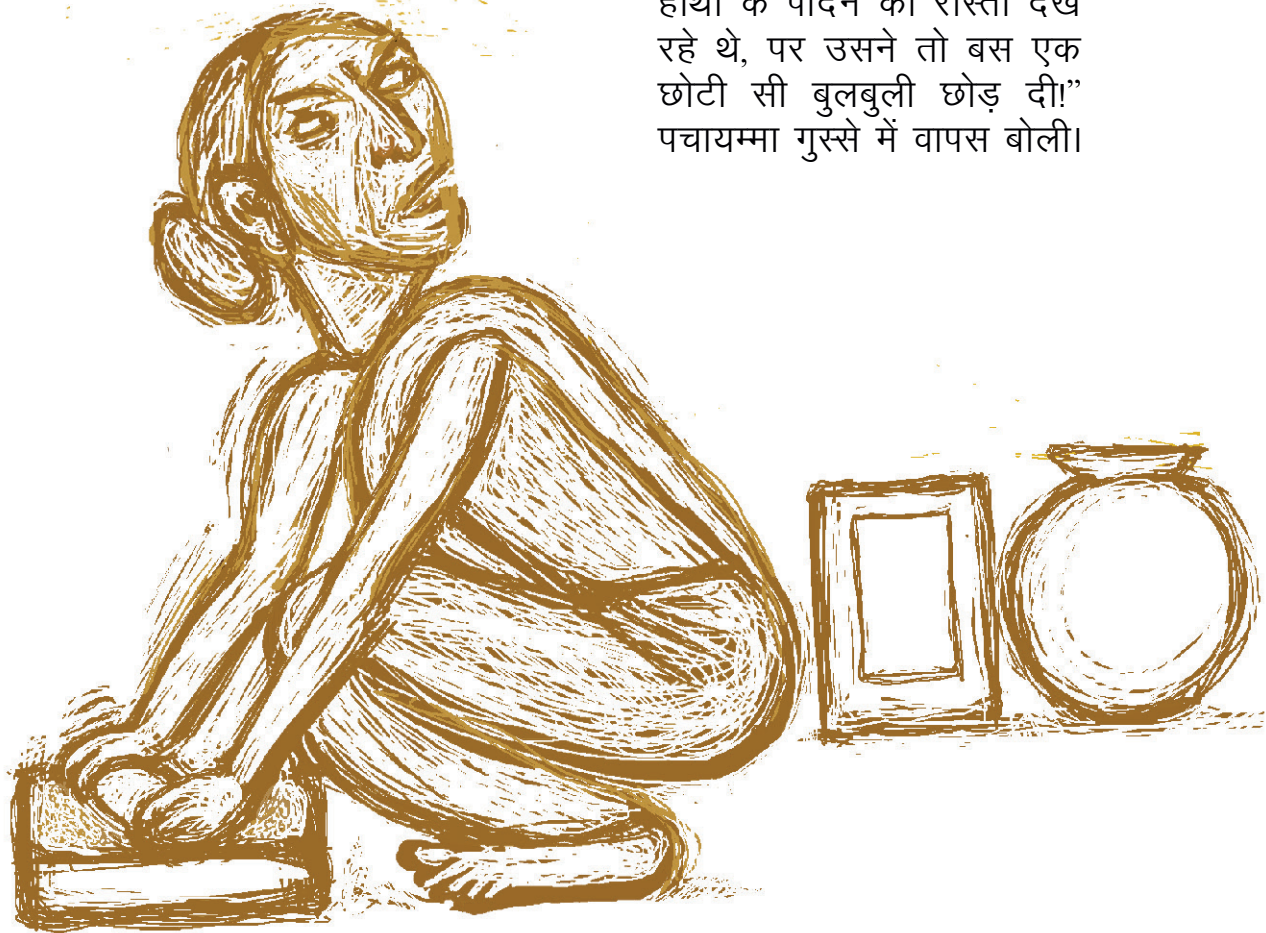
पर तब तक तो पूरे गाँव में यह खबर फैल चुकी थी और सब उसी पर बातें कर रहे थे।

“क्यों री, एन्ना? थाने जाकर आ गई वापस? इतनी जल्दी कैसे छोड़ दिया?” पनियारामुथु ने अपनी बीवी से पूछा, “कितने पैसे देने पड़े?”

पचायम्मा बीच में ही बोली, “अरे मामा, कोई जुर्माना नहीं दिया, वे तो बस हमें वहाँ तक लेकर गए और छोड़ दिया।”

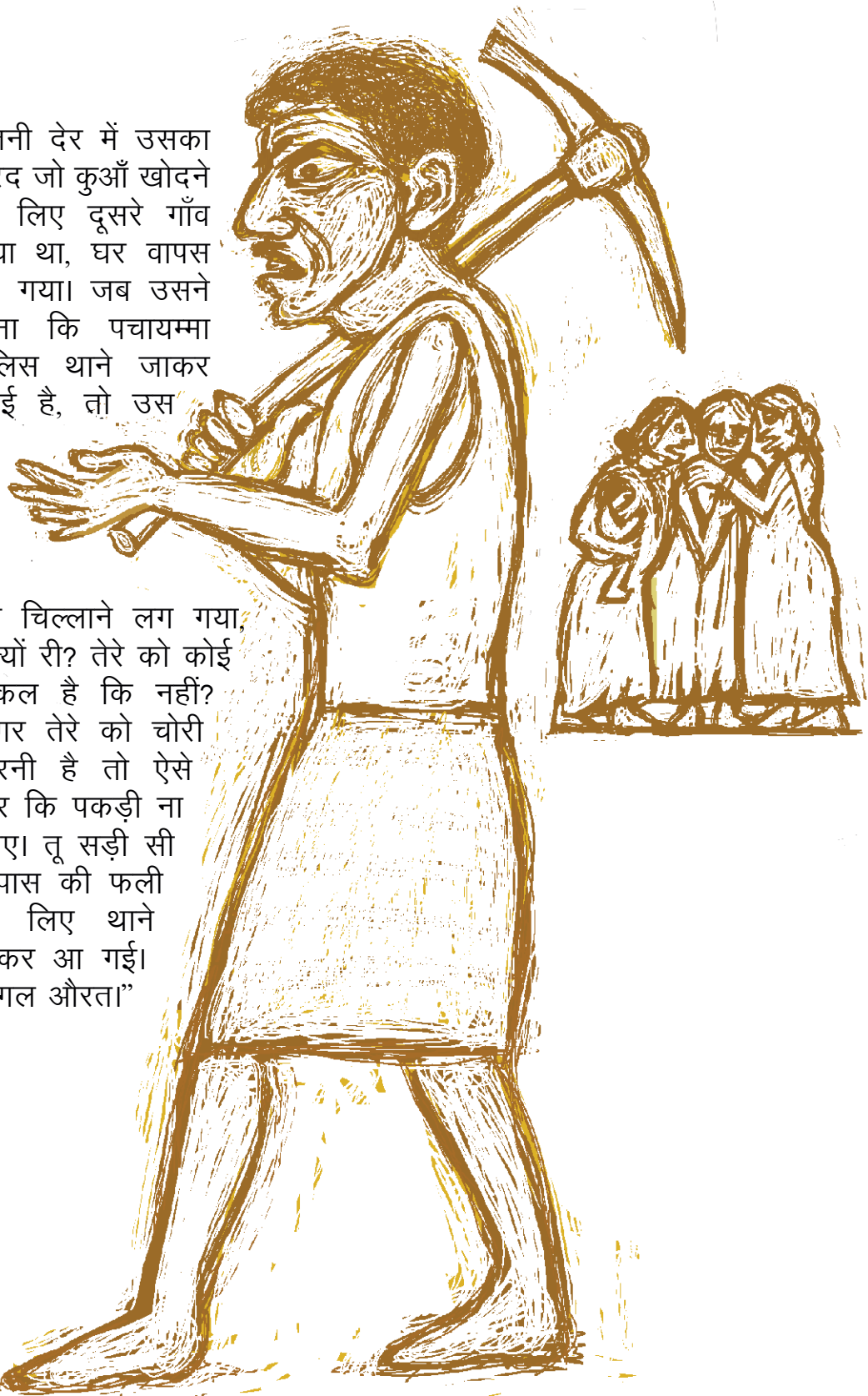
“पर गली में तो सब लोग तरह-तरह की बातें कर रहे थे.....”

“हाँ हाँ, करने दो, यह तो सारा उसी मोलगापोड़ी का काम था। उसे लगा होगा यह पुलिसवाले हमें थाने लेकर जाएँगे और हमारी इज़्जत ही लूट लेंगे। पर यह तो ऐसा हुआ जैसे कि हाथी के पादने का रास्ता देख रहे थे, पर उसने तो बस एक छोटी सी बुलबुली छोड़ दी!” पचायम्मा गुस्से में वापस बोली।



इतनी देर में उसका
मरद जो कुआँ खोदने
के लिए दूसरे गाँव
गया था, घर वापस
आ गया। जब उसने
सुना कि पचायम्मा
पुलिस थाने जाकर
आई है, तो उस

पर चिल्लाने लग गया,
“क्यों री? तेरे को कोई
अकल है कि नहीं?
अगर तेरे को चोरी
करनी है तो ऐसे
कर कि पकड़ी ना
जाए। तू सड़ी सी
कपास की फली
के लिए थाने
होकर आ गई।
पागल औरत!”



“ऐ, मचान, बेवकुफ़ की तरह बात मत कर। गाँव के लोग तो बिना कुछ जाने कहानी बनाते हैं और तू भी उसी में लग जाता है। गली में एक औरत दिखा दे जिसने कुछ नहीं चुराया हो। तूने तो कहा था कि तू काम पर जा रहा है लेकिन तू तो यही है।”

“मुझे पता था तू मेरे ऊपर ही उँगली उठाएगी, नालायक औरत। तुझे शर्म नहीं आती थाने जाकर आई है। तेरा तो पूरा खानदान ही चोरों का है।”

पचायम्मा ने अपने पति को तुरंत चुप कराया, “हाँ, गई थी मैं थाने और वापस भी आ गई; तो इसमें क्या बुरा है? एक बात बता, क्या कभी खेतों में काम करनेवाली कोई औरत, गाँव में, इस अंदाज़ से गाड़ी से उतरी है? क्या हम गंगम्मा की खुद की गाड़ी में बैठकर यहाँ नहीं आए? और थाना तो कोई हमारे गाँव से बहुत दूर भी नहीं है, है कि नहीं?”

“चोरी करके इसका पेट नहीं भरा, अब यह अपनी बहादुरी का बखान भी कर रही है। देखना, एक दिन केवल तू और तेरी ज़बान ही रह जाएँगी। लोग तेरे बारे में सच ही कहते हैं। तेरे मुँह को सिल दो या ताला लगा दो, फिर भी तू अपनी बकबक बंद नहीं करने वाली।”

“चल, अब मेरे पास तेरे से फ़ालतू बात करने के लिए वक्त नहीं है। तू जानता ही क्या है? आजकल के दिनों में अगर हम अपनी बात ना बोलें, तो ये तो हमारे मुँह में ही आ कर पाद देंगे।” ऐसा कहते-कहते पचायम्मा वेलुचामी की दुकान की तरफ़ बढ़ गई, इस उम्मीद में कि कालि बनाने के लिए थोड़ी सी रागी उधार मिल पाए।



मिर्ची का चूरा

कहानी : बामा

चित्र : कैरन हेडाक

अनुवाद : रमा वेदुला



इस कहानी का उपयोग उपरोक्त के समान क्रीएटिव कॉमन्स लाइसेन्स के तहत गैर व्यावसायिक उद्देश्यों हेतु मुफ्त विवरण के लिए किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में लेखक, चित्रकार और प्रकाशक का ज़िक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए प्रकाशक के ज़रिये लेखक व चित्रकार से संपर्क कर सकते हैं।

मूल कहानी - तमिल

अंग्रेज़ी में प्रकाशित - Harum Scarum Saar and Other Stories

(हारुम स्कारुम सार एंड अदर स्टोरीज़) वीमेन अनलिमिटेड) (2006)

कहानी कॉपीराइट © बामा

चित्र कॉपीराइट © कैरन हेडाक

पहला संस्करण: 2021/2000 प्रतियां

ISBN : 978-93-83418-43-5

मूल्य : ₹100

प्रकाशक

मुस्कान

मिट्टी का घर, प्लॉट नं. 264-65 नीलबड़,

भदभदा रोड, भोपाल 462044

वेबसाइट : www.muskaan.org

ई-मेल : publications@muskaan.org

मुद्रक : अर्चना एडवर्टाजिंग प्रायवेट लिमिटेड, सी-78,
ओखला इंडस्ट्रियल एरिया - फेज़ 1, नई

दिल्ली

बामा

बामा एक तमिल दलित नारीवादी, प्रतिबद्ध शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता और उपन्यासकार हैं। उन्होंने लेखन की शुरुआत अपने आत्मकथात्मक उपन्यासकरक्कु से की। उनके कई उपन्यास और लघु कहानियों के संकलन प्रकाशित हुए हैं। उनकी कहानियों में जाति व्यवस्था के बीच जी रहे दलित इन्सान के संघर्ष और प्रत्येक पात्र के व्यक्तित्व की झलक हमें हेडाक है।

कैरन हेडाक

कैरन अमेरिका से बायोफिजिक्स में पीएचडी की पढ़ाई पूरी करने के बाद सन् 1985 से भारत में एक शोधकर्ता, शिक्षाविद, वैज्ञानिक शिक्षक और एक कलाकार के रूप में कार्य कर रही हैं। उनके सभी प्रयासों में समाज के उत्पीड़ित वर्गों के लिए स्पष्ट तौर पर चिंता दिखाई देती है। सामाजिक परिवर्तन के लिए वे अपनी शिक्षा व कला दोनों का प्रयोग करती हैं।

रमा वेदुला

रमा लड़कियों और महिलाओं के हक और सलामती के पहलुओं पर काम करती है। कही अनकही भाषाओं और कहानियों को सुनने सुनाने में उनकी रुचि है।

